साइबर बुलीइंग

शालिनी लाम्बा[1], श्वेता सिन्हा[2] एवं प्रनती त्रिपाठी[3]
[1]अध्यक्ष, कम्प्यूटर विज्ञान विभाग, नेशनल पी0 जी0 कॉलेज, लखनऊ–226001, उ0प्र0, भारत
[2]असिस्टेन्ट प्रोफेसर, कम्प्यूटर विज्ञान विभाग, नेशनल पी0 जी0 कॉलेज, लखनऊ–226001, उ0प्र0, भारत
[3]छात्रा, बी0 सी0 ए0 , नेशनल पी0 जी0 कॉलेज, लखनऊ–226001, उ0प्र0, भारत
shalinilamba22@gmail.com, singh_shweta2005@yahoo.com, pranatitripathi@gmail.com

प्राप्त तिथि– 31.07.2016; स्वीकृत तिथि– 25.08.2016

सार– आज के समय में इंटरनेट ने सामाजिक संचार की एक अलग ही दुनिया खड़ी कर दी है और हमारा जीवन साइबर अर्थात् इलेक्ट्रॉनिक प्रौद्योगिकी से अनछुआ नहीं है। आधुनिक इंटरनेट प्रौद्योगिकी के माध्यम से किसी को परेशान या शर्मिंदा करने, धमकी देने, या किसी व्यक्ति को निशाना बनाने को साइबर बुलीइंग कहते हैं। सेलफोन, कंप्यूटर, टैबलेट तथा सामाजिक संचार उपकरण जैसे आधुनिक प्रौद्योगिकी इस सकारात्मक विचार के साथ बनाए गए थे कि इनके माध्यम से दोस्तों और परिवार से संपर्क में रहा जा सकता था, विद्यार्थी अपने विद्यालय से जुड़कर अपना ज्ञानवर्धन कर सकते थे। परन्तु आज के समय में अफवाहें फैलाने, सामाजिक नेटवर्किंग साइटों पर अवांछित पोस्ट, शर्मनाक तस्वीरों, वीडियो तथा वेबसाइट द्वारा इनका दुरूपयोग हो रहा है। साइबर बुलीइंग युवा स्तर पर साइबर हरेसमेंट कहलाता है। साइबर बुलीइंग किसी भी समय, किसी भी रूप में और जानबूझकर या अनजाने में हो सकती है। अब समय है जब अपने लिए युवाओं को एक सख्त कदम लेने की जरुरत है तथा साइबर आचार के बारे में जागरूकता फैलाकर स्टॉप साइबर बुलीइंग की ओर कदम बढ़ाने की आवश्यकता है।

बीज शब्द– साइबर बुलीइंग, इंटरनेट टेक्नोलॉली, सोशल नेटवर्क।

Cyber bullying: Resources and Prevention Strategies

Shalini Lamba[1]Shweta Sinha[2]Pranati Tripathi[3]
[1]Head, Department Of Computer Science, National P.G. College, Lucknow-226001, U.P., India
[2]Assistant Professor, Department Of Computer Science, National P.G. College, Lucknow-226001
[3]Student, B.C.A., National P. G. College, Lucknow-226001, U.P., India
shalinilamba22@gmail.com, singh_shweta2005@yahoo.com, pranatitripathi@gmail.com

Abstract- Now a days, the Internet has created a whole new world of social communications for us and our life is not untouched with "Cyber" i.e. the electronic technology. Cyber bullying is the use of modern internet technology to harass, threaten, embarrass, or target another person. The modern technologies like cell phones, computers, and tablets and social communication tools like social media sites, text messages, chat, and websites were designed with the positive thought of their involvement in the activities like connecting people with friends and family, helping students with school, imparting education and for entertainment etc. but they are now-a-days used with a negative approach to spread rumours, undesired posts on social networking sites, posting of unwanted and embarrassing pictures, videos, websites, or fake profiles. Cyber bullying can be said as Cyber harassment at the youth level. The Cyber bullying is more traumatic since it is harsh, public and moreover anonymous where youth has incomplete, wrong or sometimes no information about nameless attackers. Cyber bullying can happen in various forms at any time of day and night, and also intentionally or accidently. It is one of the most sensitive issues to be considered.

Keywords- Cyber Bullying, Internet Technology, Social Network.

एक दशक पहले तक साइबर बुलीइंग शब्द अस्तित्व में नहीं था, फिर भी आज के समय में यह समस्या अपरिहार्य है। प्रौद्योगिकी के जरिये किसी को निरन्तर धमकी देने, परेशान तथा अपमानित किये जाने को साइबर बुलीइंग कहते हैं। साइबर

बुलीइंग एक तरह का अपराध है जो बच्चों या फिर टीनेजर्स को टॉर्चर करने के लिए किया जाता है। अगर आकड़ों पर नजर डालें तो 20 प्रतिशत बच्चे साइबर बुलीइंग का शिकार होते हैं। इसके अलावा 79 प्रतिशत बच्चों को ऑनलाइन कई बार ऐसी स्थति का सामना करना पड़ता है जिससे उनके दिमाग पर नकारात्मक असर होता है। साइबर बुलीइंग शब्द साइबर और बुलीइंग शब्दों को मिला के बना है। ये वे शब्द हैं जिनका सामना हर किसी ने अपने जीवन में कभी न कभी और कहीं न कहीं किया है। आज के समय में इंटरनेट ने सामाजिक संचार की एक अलग ही दुनिया खड़ी कर दी है और हमारा जीवन साइबर अर्थात इलेक्ट्रॉनिक प्रौद्योगिकी से अनछुआ नहीं है। आज के भाग दौड़ तथा प्रतिस्पर्धा भरे समय में हर कोई किसी भी कीमत पर सफल और सर्वश्रेष्ठ बनना चाहता है, जिसके लिए वो किसी को हानि तक पहुंचा सकता है अर्थात "बुलीइंग" तक कर सकता है। अतः आधुनिक इंटरनेट प्रौद्योगिकी के माध्यम से किसी को परेशान या शर्मिंदा करने, धमकी देने, या किसी व्यक्ति को निशाना बनाने को साइबर बुलीइंग कहते हैं। सेल फोन, कंप्यूटर, टैबलेट तथा सामाजिक संचार उपकरण जैसे आधुनिक प्रौद्योगिकी इस सकारात्मक विचार के साथ बनाए गए थे कि इनके माध्यम से दोस्तों और परिवार से संपर्क में रहा जा सकता था, विद्यार्थी अपने विद्यालय से जुड़कर अपना ज्ञानवर्धन कर सकते थे। परन्तु आज के समय में अफवाहें फैलाने, सामाजिक नेटवर्किंग साइटों पर अवांछित पोस्ट, शर्मनाक तस्वीरों, वीडियो तथा वेबसाइट द्वारा इनका दुरूपयोग हो रहा है। साइबर बुलीइंग युवा स्तर पर साइबर हरासमेंट कहलाता है. साइबर बुलीइंग किसी भी समय, किसी भी रूप में और जानबूझकर या अनजाने में हो सकती है। हाल के शोध यह बताते हैं कि करीब 4 में से 1 टीनएजर साइबर बुलीइंग का शिकार हुआ है और 6 में से 1 ने यह माना है कि उन्होंने किसी को साइबर बुली किया है। समस्याएं तब पैदा होती हैं जब इस अनैतिक कृत्य के कारण पीड़ित को उस दुनिया में धकेल दिया जाता है जो कि अकेलेपन, डर तथा शर्मिंदगी से भरी है। 10 में से केवल 1 पीड़ित अपने माता–पिता अथवा किसी भरोसेमंद वयस्क को इसके बारे में बताता है और परिणाम स्वरुप पीड़ित 2 से 9 बार खुदकुशी करने की सोचता है।

स्कूल में बच्चों की आपसी खींचतान उतनी बुरी नहीं है क्योंकि वहां चीजें कुछ देर में सामान्य हो जाती हैं। लेकिन जब बच्चे ऑनलाइन छींटाकशी करते हैं, तो वहां वे एक बड़े नेटवर्क में होते हैं। साइबर बुलीइंग ज्यादा खतरनाक इसलिए भी है क्योंकि सोशल मीडिया के कारण यह सार्वजनिक रूप से देखी जा सकती है। परिणाम स्वरुप पीड़ित व्यक्ति के व्यवहार में बदलाव आने लगता है। वह अपना बचाव करने में असमर्थ हो जाता है। वह नए लोगों से मिलने में कतराता है। अतः पीड़ित खुदखुशी जैसा भयावह कदम उठाने पर मजबूर हो जाता है। ऐसी घटनाओं से कई बार निजी जिदगी बुरी तरह से प्रभावित हो जाती है और कुछ हादसों में लोगों को अपनी जान भी गवाँनी पड़ती है। साइबर बुलीइंग अनजाने में भी हो सकती है। संदेशों की अवैयक्तिक प्रकृति के कारण भेजने वाले का लहजा नहीं समझ आता है– किसी के द्वारा किया गया मजाक किसी को अपनी बेइज्जती लग सकती है। फिर भी बार–बार भेजे गए ईमेल, संदेशों तथा ऑनलाइन पोस्ट शायद ही अनजाने में भेजे जाये। जानकारों के अनुसार साइबर बुलीइंग एक तरह का ऐसा बर्ताव है जो ऑनलाइन किया जाता है। इसमें झूठी अफवाहें, गंदी तस्वीरों के द्वारा बच्चों को टॉर्चर किया जाता है। कई बार ऑनलाइन गेम्स भी बच्चों पर साइबर बुलीइंग जैसा बर्ताव करते है। लेकिन साइबर बुलीइंग खतरनाक तब साबित होता है जब बच्चें इससे जुड़ी बाते अपने माता पिता को नहीं बताते। आकड़ों के अनुसार बच्चें रोज 6 से 7 घंटे सोशल नेटवर्किंग साइटों के अलावा दूसरी साइटों में बिताते हैं। 2013–2014 स्कूल क्राइम सप्लीमेंट (नेशनल सेंटर फॉर एजुकेशन स्टेटिस्टिक्स एंड ब्यूरो ऑफ जस्टिस स्टेटिस्टिक्स) यह इंगित करता है कि कक्षा 6–12 के 7% छात्रों ने साइबर धमकी का अनुभव किया। 2013 युथ रिस्क बेहेवियर सर्विलैंस सर्वे के मुताबिक 15% हाई स्कूल छात्र साइबर बुली हुए।

आज के समय में साइबर बुलीइंग जैसा अपराध अपना वर्चस्व जमाने में इसलिए भी कामयाब हो रहा है क्योंकि लोग अपनी दिनचर्या का ज्यादातर हिस्सा प्रौद्योगिकी को समर्पित कर रहे हैं जो कि उनको अपने करीबियों से जोड़े रखने में सहायक है। साइबर बुलिंग से निपटने के दो तरह के विकल्प हैं:

निजी स्तर पर–

1. अगर किसी फोरम पर कोई आपको तंग कर रहा है तो उस फोरम से निकल जाइए।.
2. यदि आपको धमकी मिले तो इस पर पुलिस में रिपोर्ट दर्ज की जानी चाहिए।.
3. अगर पुलिस एक्शन न ले तो सीधे वकील के जरिए केस दायर किया जा सकता है।

कानून की मदद से– सेक्शन 66 ए का क्लाज बी बुलिंग के लिए ठीक बैठता है. ये कानून इंटरनेट से जुड़े कानूनों का हिस्सा है. इनमें तीन साल तक की सजा होती हैं। यह कहना बहुत ही कठिन है कि माता–पिता को कब और कैसे हस्तक्षेप करना चाहिए। परंतु जिस तरह वे अपने बच्चों की असल जिन्दगी में शामिल रहते हैं, उसी प्रकार उनके साइबर जगत में भी साथ रह कर उनको साइबर बुलीइंग जैसे खतरों से बचा सकते हैं। सही ही कहा गया है– हमारा भविष्य हमारे वर्तमान पर निर्भर करता है। अतएव यही समय है जब अपने लिए युवाओं को एक सख्त कदम उठाने की आवश्यकता है तथा साइबर आचार के बारे में जागरूकता फैला कर स्टॉप साइबर बुलीइंग की ओर कदम बढ़ाने की आवश्यकता है साथ ही साथ युवा ये प्रतिज्ञा ले कि: न किसी को साइबर बुली करें और न उसका शिकार हों।

संदर्भ

1. ब्राउन, टी0(दिसम्बर 5, 2010) साइबर बुलीइंग–बींग प्रोटेक्टिव, इन 21 सेंचुरी बुलीइंग "साइबर बुलीइंग" एण्ड द नीड फॉर टेक्निकल इंटरनेट सेफ्टी, रिट्रीव्ड फ्रॉम वेबमास्टर ग्रूव्ज स्कूल।
2. गोमेज, एन0(दिसम्बर 8, 2010) साइबर बुलीइंग– द नेशन्स न्यू एपिडेमिक, रिट्रीव्ड फ्रॉम कन्वर्ज वेबसाइटः
http:// www.convergemag.com/policy/Cyberbullying-The-Nations-New-Epidemic.html
3.साइबर बुलीइंग(2010) रिट्रीव्ड फ्रॉम नेशनल क्राइम प्रिवेंशन काउंसिलः
http://www.ncpc.org/topics/cyberbullying.